Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-III MARCH 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

कालिदास के साहित्य में प्रेम का स्वरूप

डॉ. पी. बी. बिरादार
संस्कृत विभागप्रमुख
महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर जि. लातूर महाराष्ट्र

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सबसे प्रसिद्ध कवी है। उनकी सात कृतियां पूरे संसार में प्रसिद्ध है। उनमे तीन नाटक, दो महाकाव्य और दो खण्डकाव्य है। वे रोमॅटिक कवी रहे है। उनके साहित्य में प्रेम का स्वरूप कैसा है इसकी उत्सुकता बनी रहती है। इसी का विष्लेशन इस शोधपत्र में करने का प्रयास किया गया है।

कालिदास के साहित्य में प्रकृति के प्रेम साथ साथ मनुष्य का प्रेम भी काफी खास रहा है। प्रेम किन गुणो से महान और आदर्श बना है उसके कुछ गुण नीचे देने का प्रयास किया गया है।

1. **योग्यता** –

महाकवि कालिदास के साहित्य में प्रेम या उसकी स्वीकृती करते समय प्रथम उसकी पात्रता, स्वीकृती या शादी करते समय देखी गयी है। यह पात्रता केवल वर्ण या जाती की ही नही बल्की उनके गुणों की भी है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के प्यार करने लगता है, पर वह ऋषी या समाज के भय सें शायद उसका वर्ण, उसकी चाहत आदि के बारे में सोच कर वह मेरे लिए पात्र है या नही यह देखता है। 'अशंय क्षत्रियपरिग्रहक्षमा।'(शा.1.2)

इसी तरह कुमारसंभवम् में पार्वती शिव से प्रेम करती है पर वह केवल सौंदर्य के बल पर उसे आकर्षित नही कर पाती। अपने आपको शिव के काबिल गुणों से बनाने के लिए वह पूरी कोशिश करती है।

2. **तपस्या** –

महाकवि कालिदास के पात्रो को प्रेम सहज रूप से नही मिलता। उसे पाने के लिए कडी मेहनत करनी पडती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में राजा दुष्यन्त को शकुन्तला का प्यार पाने के लिए बहुत प्रयास करना पडा और शकुन्तला को भी। कुमारसंभवम् में पार्वती सौंदर्यसे शिव को आकर्षित नही कर पायी तो अपने रूप की वह निन्दा करती है। निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वति।(कु.5.2) शिव के प्यार के लिए उसे कडी तपस्या करनी पडी। इस तरह मालविकाग्निमित्रम् में राजा अग्निमित्र को मालविका का प्रेम पाने के लिए करनी पडा।

3. **समर्पण** –

अपने प्रेम को पाने के लिए महाकवि कालिदास के पात्रो को कडी मेहनत के साथ साथ पूरा समर्पण करना पडता है। लगभग सभी पात्र पूर्ण समर्पण के साथ अपना प्यार पाने की कोशिश मे लगे रहते है। उस समय उनको कोई भी रोक नही सकता। मॉ, बाप, प्रकृती, धूप, छाव आदी। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कहा है की 'सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानदी अवतरति।'(शा.3) सागर को छोड कर नदी कहा जाएगी।

कुमारसंभवम् में पार्वती शिव को प्यार पाने के लिए राजकीय शाही थाट बाट, सब सुख आदि छोड तपस्या करने में लग जाती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त शकुन्तला का प्यार पाने के लिए राजधानी जाता नही। इधर उधर उसके लिए धूप मे घूमता है। मालविकाग्निमित्रम् में राजा अग्निमित्र को मालविका का प्रेम पाने के लिए पूरा समर्पण करना पडा।

4. अनन्यता –

अनाश्रया न शोभन्ति पण्डिता वनिता लता। आश्रय के शिवा बुद्धिमान लोग, नारी और वेली शोभा नही देती। लेकिन वह आश्रय एकही हो तो उसमें उत्कटता आती है। अनन्यता यानी कोई और नही बस वही। एकबार किसी से प्रेम होने के बाद किसी और की बात मन में भी न आने देना यह खासीयत कालिदास के पात्रो की है। पार्वती शिव को छोड के किसी से भी विवाह नही करना चाहती। शिव की कितनी भी निंदा करो, शिव खुद भी करता है पर वह अनन्य रहती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शकुन्तला राजा दुष्यन्त के प्रति अनन्य थी। उसके बिना वह कहती है की 'अन्यथा अवश्यं सिन्चति मे तिलोदकम्।'(शा.3) मेघदूत मे यक्ष यक्षिणी के प्रति अनन्य था। जिस तरह मछली पाणी के प्रति अनन्य रहती है।

5. स्वीकृती –

महाकवि कालिदास के लगभग सभी पात्रो ने प्रेम को सहज रूप से नही स्वीकारा। शाकुन्तलम् में अपना प्रेमी भी प्रेम करता है या नही इस डर से दोनो के दिल की धडकने तेज होती है।

प्यार की तसल्ली होने परही दुष्यन्त स्वंय सामने प्रस्तुत होकर स्वीकृती या निवेदन करता है। कुमारसंभवम् में पार्वती की शिवके प्रति अटल तपस्या और दृढ प्रेम देख कर ही शिव प्रेम को स्वीकृती देता है और शादी का निवेदन करता है। रघुवंश में इंदुमती स्वंयवर में स्वीकृती की बहुत ही खुबसुरत कश्मकश दिखाई गयी है।

6. उत्कटता –

कालिदास के सभी प्रेमी पात्र विरह की अग्नि में तपकर शुद्ध होते है। बिना विरह की अग्नि के किसी प्रेम का उतनी मोल नही लगता। विरह से उनका प्रेम शुद्ध होकर केवल शारिरीक नही रहता वह असामान्य हो जाता है। वह उत्कट हो जाता है। मेघदूत मे यक्ष यक्षिणी के विरह में व्याकूल होकर मेघ या बादल से बाते करता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विरह दिनरात तडपता है। उसका प्यार भी उत्कट बन जाता है।

7. निश्कर्श –

इस तरह महाकवि कालिदास के पात्रो का प्रेम अलौकिक बन जाता है। प्रेम के प्रति उनकी दृढता, उसको पाने के लिए किए गए अथक प्रयास, किसी और का मन में भी विचार न कर अनन्य रहना, खुद उनके काबिल बनाना और विरह तडपना इन सभी बातों से उनका प्रेम असामान्य और अलौकिक बन जाता है।

संदर्भग्रंथ –

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम
2. कुमारसंभवम्
3. मेघदूतम्
4. मालविकाग्निमित्रम्
5. रघुवंशम्

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com